४०१/५४५

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी १८ जून, २०१७)

(समय : सुबह ९:०० से ११:१५) **सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र -१**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं। **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : नीलकंठ चरित्र - चतुर्थ संस्करण : दिसम्बर - २०१४

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए। [९]

१. ''आप मेरी छबि अपने मन में रखेंगे, तो मैं आपके समीप ही रहूँगा।'' (४२)
२. ''आप इतने दिनों से भूखे हैं, अत: हम आपके लिए सत्तू लेकर आए हैं।'' (७१)
३. ''अकाल ही मृत्यु के मुँह में क्यों जा रहे हैं?'' (१९)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए। (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. काशीदास की वृद्ध माता नानीबाई अत्यंत प्रसन्न हुई। (७७)
२. तपस्वी वट-वृक्ष के उपर शाखाओं में झोली बांध कर सो गए। (१६)
३. रामानंद स्वामी श्रीकृष्ण की भक्ति का उपदेश देने लगे। (८७)

प्र.३ निम्नलिखित किन्हीं <u>एक</u> प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए। (वर्णनात्मक) [५]

१. मोहनदास को नीलकंठ के दर्शन (३४-३६) २. नौ लाख योगियों का उद्धार (४६-४८) ३. खंभा पकड़कर रहना (१०१-१०३)

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए। [५]

१. नीलकंठ वर्णी ने किस लिए दीवाल के गोखा को बंद कर दिया? (१००)
२. नीलकंठ वर्णी जहाँ भी जाते वहाँ अध्यात्मज्ञान का सिद्धांत जानने हेतु कौन-से प्रश्न पूछते? (९५)
३. जनकपुर में नीलकंठ वर्णी कहाँ आ पहुँचे? (५६)
४. पिबैक को देखकर साधु क्या करने लगे? (४३)
५. लक्ष्मणजी नीलकंठ वर्णी के लिए क्या ले आए? (१८)

प्र.५ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें। [४]

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा।

१. नीलकंठ वर्णी को गृहत्याग के बाद मिले (१०)
   (१) ☐ कालिय (२) ☐ गणपति
   (३) ☐ कोटरा (४) ☐ हनुमानजी
२. रामानंद स्वामी का अक्षरवास (१२०)
   (१) ☐ संवत् १८५८ (२) ☐ मागशर शुक्ला त्रयोदशी
   (३) ☐ कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी (४) ☐ संवत् १९५७

प्र.६ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए। [४]

१. ..... कोली की झोली को नीलकंठ वर्णी ने स्पर्श करते ..... जीवत हो गई। (८१)
२. तुंगभद्रा नदी ..... में बहती है, इसलिए लोग इसे ..... कहते हैं। (७४)
३. ..... को खोज ने के लिऐ ..... मित्र ने कुएँ में छलांग लगा दी। (१२-१३)
४. नीलकंठ वर्णी को खोज ने के लिए जयरामदास को मा ने एके ..... में ..... देकर भेजा। (५५)

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग : १ - द्वितीय संस्करण, अक्टूबर - २०१५

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए। [९]

१. ''यह हैं हमारा तिलक और ये हैं हमारे साधु।'' (२९)
२. ''धाम में आने की जल्दबाजी मत करना।'' (१०-११)
३. ''आप तो मुंबई के सेठ जैसे हैं।'' (६७)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए। (दो से तीन पंक्ति में) [४]

१. महाराज को वह व्यक्ति प्रिय है, जो धर्म का पालन करता हो। (३९)
२. जेठा भगत ने त्यागी की दीक्षा ले ली। (४२)

प्र.९ खैया खत्री के साथ शास्त्रचर्चा (६-७) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए। (वर्णनात्मक)** [५]

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर ''**सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - १**'' परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहीं होंगी ।)

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए। **[४]**

१. महाराज के अक्षरधामगमन के बाद जोबनपगी को किस तरह शान्ति मिलती थी? (४१)

२. भगतजी की अंतिम बीमारी में जेठाभगत ने लगातार कितने दिन तक सेवा की? (५१)

३. झीणाभाई के लडके का क्या नाम था? (३१)

४. धरमपुर से लोटते वक़्त महाराज ने जोबन को किसलिए क्या वचन दिया? (३७)

प्र.११ निम्नलिखित विषय और सूचनानुसार छः सही क्रमांक और उस सही क्रमांक को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए। **[६]**

विषय : सद्‌गुरु देवानन्द स्वामी (१३, १५-१६)

१. देवानंद स्वामी के आशीर्वाद से ही नानालाल कवीश्वर बने। **२.** कुछ समय तक सफ़ेद वस्त्रों में रखकर श्रीहरि ने उन्हें दीक्षा प्रदान करके उनका नाम देवानंद स्वामी के रूप में किया। **३.** अंगरखा की बाँह कुहनी तक चढ़ाई। **४.** ब्रह्मानन्द स्वामी के अक्षरवास के पश्चात् वढ़वाण मंदिर के महंत पद पर नियुक्त किए गए। **५.** दूध की धार उनकी कुहनी तक चली आती थी, जिसे वे जीभ से चाट लेते थे। **६.** परसो मैं धाम में जानेवाला हूँ, अतः मेरे लिए विमान तैयार रखना। **७.** देवानंद स्वामी का जन्म संवत् १८५९ की कार्तिकी पूर्णिमा को हुआ था। **८.** 'दादाखाचर' के घर की दहलीज पर कंकु के पाँच पदचिह्न दिखेंगे, तो सच मानना। **९.** श्रीहरि के मनोहर स्वरूप में देवीदान का मन बहुत पहले ही चिपक गया था। **१०.** उपदेश प्रधान कीर्तनों में शान की अधिक झलक मिलती है। **११.** रया खाचर ने दलिया और दूध से भरा हुआ कटोरा श्रीहरि के समक्ष रख दिया। **१२.** पाँव नीचे लटकाए हुए श्रीहरि बैलगाड़ी पर बैठे-बैठे दूध और दलिया खाने लगे।

(१) केवल सही क्रमांक ☐☐☐☐☐☐

(२) यथार्थ घटनाक्रम ☐☐☐☐☐☐

सूचना : (१) केवल सही क्रमांक के सभी छः उत्तर क्रमांक सही होंगे तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे। (२) यथार्थ घटनाक्रम भी सही होगा तो ही ३ गुण प्राप्त होंगे। अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए। **[४]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे। अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा।

उदाहरण : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : मोतीभाई के पुत्र जेठाभाई, खेत में घुमते समय बिच्छू के काटने से धाम में गए। बाद में श्रीजीमहाराज के साथ आकर मोतीभाई को नारायण कहा।

उत्तर : स्वामी यज्ञप्रियदासजी : आशाभाई के पुत्र **देसाईभाई, चारागाह** में **काम** करते समय **सर्पदंश** होने से धाम पधारे। बाद में **भगतजी महाराज** के साथ आकर **आशाभाई** को **जय स्वामिनारायण** कहा।

१. सद्‌गुरु ब्रह्मानन्द स्वामी : भगवान स्वामिनारायण ने पंचाला में बीमारी ग्रहण कर ली। वे मूलजी ब्रह्मचारी को प्रतिदिन स्वयं बुलाते, उनकी प्रशंसा करते और ठाकोरजी के भोजन के थाल से उन्हें प्रसादी देते थे। (९)

२. भक्तराज दरबार श्री झीणाभाई : संवत् १८६८ के कार्तिक मास में आत्मानन्द स्वामी नीलकंठ वर्णी के साथ जूनागढ पधारे। उस समय उन्होंने नवाब के दरबार में पधरावनी की। (२५)

३. महिलाभक्त जीवुबाई : 'यह सारा चरित्र छोड़ दो! यदि यह सचमुच में तेरा गुरुजी है, तो अभी शरबत पी जाए; इस भाले से तुम्हारे शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।' एकाएक जीवाखाचर ने ललकारा। (४३)

४. भक्तराज जोबनपगी : कई वर्षों पहले लक्ष्मीनारायण वर्णीवेश में मेहलाव पधारे थे। श्रीहरि ने जोबनपगी को दर्शन दिया था, परन्तु अपनी देव वृत्ति के कारण वह सबकुछ भूल गया था। यह उन दिनों की बात है, जब समग्र चरोत्तर में जोबनपगी की कीर्ति जमी हुई थी। (३३, ३५)

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१३ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ३० पंक्ति में निबंध लिखिए। **[१०]**

१. प्रमुखस्वामी महाराज की दिव्य जीवनकथा के अविस्मरणीय स्वर्णिम पृष्ठो
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - सितम्बर/अक्तूबर-२०१६, पा.नं. १८-१२७)

२. प्रमुखस्वामी महाराज का अनोखा प्रदान : परम पूज्य महंत स्वामी महाराज
(स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - सितम्बर/अक्तूबर-२०१६, पा.नं. १६०-१६१)

३. सूरत अध्यात्म और धर्म के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - जनवरी-२०१७, पा.नं. ४-६, ५८)

❊ ❊ ❊

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १६ जुलाई, २०१७ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx